IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

मातृ भाषा के रूप में जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा शिक्षण का महत्त्व: झारखण्ड के सन्दर्भ में

मुन्ना राम महतो

शोधार्थी

शिक्षा विभाग, झारखण्ड केन्द्रीय विश्वविद्यालय , राँची .

मातृभाषा का शाब्दिक अर्थ है। "माता की भाषा" मातृ भाषा एक ऐसी भाषा है, जिससे एक व्यक्ति जन्म या शैशवावस्था से सीखा है और धारा प्रवाह बोलता है, यह वह भाषा है, जो किसी व्यक्ति की सांस्कृतिक और जातीय पहचान के साथ सबसे अधिक निकटता से जुड़ी होती है, और अक्सर उनके परिवार, समुदाय और रोजमर्रा की ज़िंदगी में संचार के प्राथमिक साधन के रूप में कार्य करती है। मातृ भाषा बालक जन्म से ही अपने परिवार के सदस्यों के मध्य रहकर सीखता है। बालक अनुकरण के द्वारा भाषा सीखता है। माँ -बाप जैसा बोलते हैं, वैसा ही बालक भी अनुकरण करते हैं। इस प्रकार, जिस भाषा को बालक अपने माता-पिता के अनुकरण कर सीखता है, उसे मातृ भाषा कहते हैं।

झारखण्ड में विभिन्न जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषाएँ मातृ भाषा के रूप में उपयोग किये जाते हैं। जिनमें मुख्य रूप से संताली, मुंडारी, कुडुख, हो,खड़िया, कुरमाली, नागपुरी , खोरठा, पंचपरगनिया, का विद्यालय से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक शिक्षण कार्य होता है। इन भाषाओँ को दो वर्गों में वर्गीकृत किया गया हैं पहला जनजातीय तथा दूसरा क्षेत्रीय। जनजातीय भाषा केअंतर्गत-संताली, कुडुख, मुंडारी, हो,खडिया तथा क्षेत्रीय भाषा अंतर्गत- कुरमाली, नागपुरी, खोरठा, पंचपरगनिया को मातृ भाषा के रूप में स्वीकृत किया गया है। चूँकि झारखण्ड विविधताओं से पूर्ण भारतीय राज्य है। यहाँ भौगोलिक विविधता, जातीय एवं जनजातीय विविधता, सांस्कृतिक विविधता के साथ ही साथ भाषाई विविधताएँ भी पाई जाती है। ये विविधताएँ ही इनकी सुन्दरता है ।

मातृ भाषा की परिभाषाएँ –

- एनसीईआरटी के अनुसार , "मातृ भाषा भाषा का वह रूप है जो एक बच्चा अपनी माँ से, पड़ोस से, किसी विशेष क्षेत्र या समाज से सीखता है ।"
- महाकवि रविन्द्र नाथ टैगोर के अनुसार , "मातृ भाषा के बिना न आनंद मिलता है, न विस्तार होता है और न ही हमारी योग्यताएं प्रफुल्लित होती है।"

➢ स्वामीनाथन अय्यर की रिपोर्ट के अनुसार, "बच्चों के सीखने के लिए सर्वाधिक सरल भाषा वही है जो वे घर में बोली जाने वाली भाषा सुनते हैं। यही उनकी मातृ भाषा है।"

➢ बेलस बोर्ड ने मातृ भाषा के सम्बन्ध में लिखा है, "केवल एक ही भाषा में हमारे भावों की स्पष्टतम व्यंजना हो सकती है। केवल एक ही भाषा के सूक्ष्म संकेतों को हम सहज और निश्चित रूप से ग्रहण कर सकते हैं और यह भाषा वह होती है, जिसे हम अपनी माता के दूध के साथ सीखते हैं, वाही मातृ भाषा है।"

मातृ भाषा का महत्व

बालकों के स्वाभाविक विकास में उनकी मातृ भाषा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। मातृ भाषा हमारे विकास की आधारशिला होती है। मातृ भाषा में प्राथमिक शिक्षा होने से पाठ्यक्रम की बेहतर समझ के साथ -साथ स्कूल के प्रति अधिक साकारात्मक दृष्टिकोण उत्पन्न होता है और छात्रों को विद्यालय से भय नहीं लगता है। बल्कि, विद्यालय जानें में आनन्द की अनुभूति करते हैं। जब बच्चे अपनी मातृ भाषा के माध्यम से पढ़ते हैं तो वे मौलिक चिचंतन करते हैं और भावों को आत्मसात करतें हैं। जिससे उनकी समझ विकसित होती है, आत्मविश्वास बढ़ता है। मातृ भाषा बच्चों को राष्ट्रीयता से जोड़ती है, देश प्रेम की भावना का विकास होता है। यह संस्कार की संवाहिका होती है। मातृ भाषा से मानव की चेतना पल्लवित होती है। यह मानवता के वि कास की भी अभिलेखागार होती है। यह ववचारों की जननी है, भावात्मक विकास का उत्तम साधन है।

➢ मानसिक विकास में सहायक – भाषा और भाव में गहरा सम्बन्ध होता है। बालक अपने घर में माता-पिता,एव परिवार के अन्य लोगों के साथ मातृभाषा की ध्वनियों का अनुकरण ही नहीं करता बल्कि उनमें भावनाओं को भी ग्रहण करता है।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के अनुसार, "मनुष्य के मानसिक सक विकास के लिए मातृ भाषा उतनी आवश्यक है,जितना शिशु के शारीरिक विकास के लिए माता का दूध ।"

कवि कॉलेज के अनुसार , "मनुष्य के शरीर में धड़कता ह्रदय ही भाषा है।"

जो छात्र किसी चीज को अपनी मातृ भाषा में सीखते हैं, वे अवधारनाओ को बेहतर ढंग से समझ पाते हैं। शिक्षण के माध्यम के रूप में मातृ भाषा/क्षेत्रीय भाषा को बढ़ावा देकर, बच्चे अपनी संज्ञानात्मक क्षमताओ को अधिक प्रभावी ढंग से विकसित कर सकते हैं, जिससे बेहतर शिक्षण परिणाम प्राप्त होते हैं। भाषा के अतिरिक्त अन्य विषयों जैसे– विज्ञान, गणित, भूगोल, आदि का ज्ञान मातृ भाषा द्वारा दिया जाय तो अधिक प्रभावक होगा और सहजग्राह्य होगा।

➢ भावात्मक विकास में सहायक – छात्र अपनें भावों को मातृ भाषा में अभिव्यक्त करनें में सहज अनुभव करते हैं। अध्यापक यदि मातृभाषा को शिक्षा का माध्यम बनाते हैं तो छात्रों में सीखनें की प्रेरणा और आत्मविश्वास की भावना जागतृ होती है। मातृ भाषा में रचा भावात्मक साहित्य प्रेम, करुणा, त्याग, बलिदान, वात्सल्य, सहानुभूति, परोपकार जैसे भावों का पोषण करता है। एक मातृ भाषा भाषी व्यवियों में आपसी प्रेम रहता है,अपनापन के साथ ही एकता की भावना बढ़ती है। अत: इस भावात्मक एकता को विकसित करने के लिए मातृ भाषा बहुत महत्वपूर्ण है।

रायबर्न के अनुसार, "मातृ भाषा एक ओर तो ज्ञान, प्रसन्नता एवं आनंद का स्रोत है, भावनाओ और रुचियों की पथप्रदर्शक है, तो दूसरी ओर ईश्वर शक्ति के प्रयोग का साधन है।"

कालरिज ने कहा है, "मातृ भाषा मनुष्य के हृदय की धड़कन की भाषा है।"

➢ संस्कृति संरक्षण में सहायक – मातृ भाषा/क्षेत्रीय भाषा को जीवित रखने से एक पूरी संस्कृति भी जीवित रहती है। संस्कृति से अभिप्राय वहाँ की परम्परा, क्रिया -कलाप, रहन-सहन, रीति -रिवाज आचरण कुशलता से है जिसका ज्ञान वहाँ की मातृ भाषा द्वारा ही सभंव है। भाषा के आभाव में, न केवल भाषा विलुप्त होने का खतरा है, बल्कि सांस्कृतिक प्रथाएं ख़त्म हो जाएगी , जिससे सांस्कृतिक विविधता कम हो जाएगी । इसके अतिरिक्त कवियों, लेखकों, और इसी तरह के लोगों के लिए रचनात्मक प्रेरणा के स्त्रोत भी गौण हो जायेंगे। प्रत्यके भाषा में साहित्य का एक भंडार होता है, जो कलात्मक अभिव्यक्ति का परिणाम होता है। मातृ भाषा से शिक्षा एवं संरक्षण करने का मतलब साहित्य के भंडार को संरक्षित करना और रचनात्मक अभिव्यक्ति को और बढ़ावा देना भी है।

जाकिर हुसैन कमेटी के अनसुार, "मातृ भाषा बच्चे को अपने पूर्वजों के विचारों, भावों तथा महत्त्वकंक्षाओ की समृद्ध भावों से परिचित कराने का सर्वोत्तम साधन है। "

➢ शारीरिक विकास में सहायक – मातृ भाषा स्वर-तन्त्रियों के विकास में सहायक होती है। शिशु को बचपन से ही मातृ भाषा में बात करने से उनकी समझ बढ़ती है। वे कविताओं, कहानियों, लघुकथाओं के भावों को समझते हैं और आनंद की अनुभूति करते हैं। बच्चे को माता-पिता, दादा-दादी, नाना-नानी का लोरीयां सुनकर और दुलार पाकर असीमित आनन्द की अनुभूति करते हैं। ये मातृ भाषा बच्चे के शारीरिक विकास रुपी भवन केलिए नींव का काम करती है । नींव जितनी मजबूत होगी, भवन भी उतना ही मजबतू होगा। शारीरिक स्वास्थ्य ही मानसिक स्वास्थ्य का आधार होता है ।

रायबर्ण के अनुसार , "मातृ भाषा एक उपकरण है, आनन्द, प्रसन्नता और ज्ञान का एक स्रोत है, रुचियों एवं अनुभूतियों का एक निदेशक है और विधाता द्वारा मनुष्य को दी गई उस सर्वोतम शक्ति के प्रयोग का साधन है ज़ीसके द्वारा हम उस भगवान के निकटतम पहुँचते हैं।"

शैक्षिक विकास में सहायता – मातृ भाषा, ज्ञानार्जन तथा विचार विनिमय का सवोत्तम तथा सशक्त साधन है। विभिन्न ववषयों का ज्ञान बालकों को जितनी सरलता से मातृ भाषा भाषा द्वारा कराया जा सकता है, उतनी सरलता से किसी विदेशी भाषा द्वारा नहीं । इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र आदि की शिक्षा जितनी अच्छी तरह से मातृ भाषा में ही दी जा सकती है उतनी अन्य माध्यम से नहीं दी जा सकती, चूँकि मातृ भाषा द्वारा भावों को आसानी से समझा जा सकता है।

महात्मा गाँधी नें कहा है, "बालक अपना पहला पाठ अपनी माता से ही पढ़ता है, इसलिए उसके मानसिक विकास के लिए उस के ऊपर मातृ भाषा के अतिरिक्त कोई दूसरी भाषा लादना मैं मातृ भाषा के विरुद्ध पाप समझता हूाँ। "

➢ सामाजिक विकास में उपयोगी- मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। मनुष्य और समाज का आदान प्रदान मातृ भाषा से आरम्भ होता है। बच्चा जिस समाज में पैदा होता है उसके आचार-विचार तथा रीति-रीवाज वह मातृ भाषा के माध्यम से सीखता है। सामाजिक एकता तथा समाज की आवश्यकताओ को समझ कर उन्हें पूरा कराया जाए, ऐसी व्यवहार कुशलता मातृ भाषा द्वारा ही संभव है।

भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने- एक कविता के माध्यम से मातृ भाषा के महत्व को स्वीकारा है।

निज भाषा उन्नति अहे, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के मिटै न हिय के शूल ।।"

➢ व्यक्तित्व के विकास में सहायक - मातृ भाषा के ज्ञान पर बालकों के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास निर्भर करता है। बालक के बौद्धिक, नैतिक और सांस्कृतिक विकास में मातृ भाषा ही सहायक होती है। बालक के मातृ भाषा में शिक्षा ग्रहण करनें पर उसके शारीरिक अवयवों पर दबाव भी नही पड़ता है तथा सुनने, बोलने, लिखने एवं पढनें आदि से सम्बंधित सभी इन्द्रियों का विकास ठीक से हो पता है। मातृ भाषा से मस्तिष्क और ह्रदय स्वतंत्रता पूर्वक कार्य करते हैं,जबकि यदि शिक्षा अन्य भाषा में दी जाय तो मानसिक तनाव बढ़ जाता है। इस मानसिक तनाव के वजह से बालक अपना संतुलन खो बैठता है बालकों में आत्म बल धीरे धीरे कम होता चला जाता है, और वह विकास की वास्तविक गति के साथ चलने में असहज महशुश करने लगते हैं,चूँकि बालक नए भाषा को सीखने और समझने में अपनी बहुत सारा समय और उर्जा नष्ट कर देतें हैं , तथा अपने को कुंठित महशुश करते हैं। जिससे उसका व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास नही हो पाती है।

➢ राष्ट्रीय एकता में सहायक – स्वतंत्रता संग्राम के समय विद्वत जनों ने यह अनुभव कर लिया था कि शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी विदेशी भाषा होने के कारण भारतीय चिंतन कुंठित हो गया है। राज्य का जनमानस दासता की जकड़नों में जकड़ा हुआ है। विद्वतजनों नें अंग्रेजों की निति को समझा कि यदि किसी जाति, धर्म अथवा देश को पराधीन रखना है तो उसके साहित्य को नष्ट कर देना चाहिए , वह स्वयं नष्ट हो जायेगा। विदेशियों ने यही किया और यहाँ के भाषाओँ के महत्व को कम बता कर इसे नष्ट करने का प्रयाश किया, जिस कारण हम सभी विखंडित रहे और हम पर जुल्म होता रहा। इस प्रकार से मातृ भाषा राष्ट्रीय एकता के लिए नितान्त आवश्यक है।

➢ नागरिकता का विकास में सहायक – प्रत्येक नागरिक के अपने देश के प्रति अधिकार व् कर्तव्य होते हैं जिन्हें जानना राष्ट्रीय उन्नति के लिए आवश्यक है। इनकी जानकारी मातृ भाषा के अतिरिक्त अन्य भाषा में सुचारू रूप से नही दी जा सकती है। व्यक्ति की अपनी भाषा में कही हुई बात उसे अधिक प्रभावित करती है। वह राजनितिक व् सामाजिक गतिविधियाँ तथा समस्याओं को भली – भाँती समझकर अपने अच्छे नागरिक होने का प्रमाण दे सकता है। भारत चूँकि गाँवों का देश है और ग्रामीण जनमानस मातृ भाषा/क्षेत्रीय भाषा का उपयोग अपने दैनिक उपयोगी दिनचर्या में अत्यधिक करते हैं।

माइकेल वेस्ट के शब्दों में, "भाषा ही वह तत्व है जिससे हमारी आत्मा का गठन होता है। भाषा का महत्व केवल बौद्धिक विकास में ही नहीं है अपितु चारित्रिक विकास में भी है जिसके फलस्वरूप देश का प्रत्येक नागरिक अच्छे, गुणों से युक्त हो सकता है।"

➢ सृजनात्मक क्षमता का विकास में सहायक – मातृ भाषा पर पूर्ण अधिकार होने पर बालकों का साहित्य के प्रति लगाव व रुझान रहता है, जो उनमें साहित्यिक व सजृनात्मक प्रवृति का विकास करता है। साहित्यिक रूचि साहित्य सृजन के लिए प्रेरित करती है। पहले बच्चे छोटी-छोटी कहानियाँ लिखने, फिर लेख, निबन्ध, लघु कथाएँ , उपन्यास और कविताएँ लिखने के लिए प्रेरित होते हैं। इस प्रकार मातृ भाषा में अभिव्यक्तिकरण की सहजता वविद्यार्थियों में सृजनात्मक प्रतिभा का विकास करती है।

रायबर्न के अनुसार, "मातृ भाषा की शिक्षा महत्वपूर्ण है क्योंकि मातृ भाषा शिक्षण पर हमारे विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास निर्भर है जीवन का विकास,ज्ञान में वृद्धि,आत्माभिव्यक्ति की क्षमता का विकास ,सृजनात्मकता व उत्पादन क्षमता का विकास।"

➢ मातृ भाषा द्वारा नैतिक मूल्यों का विकास में सहायक – नैतिक मूल्यों से अभिप्राय उन सभी गुणों से है जो व्यक्ति को आदर्श जीवन बीताने को प्रेरित करते हैं। सच्चाई, ईमानदारी, दया, सहानुभूति, प्रेम,कर्तव्य-परायणता आदि नैतिक मूल्यों का विकास में कही व रची कहानियों, प्रवचनों द्वारा सहजता से ही विकास हो सकता है। जब हम किसी व्यक्ति के नैतिक मूल्य जगाना चाहतें हैं तो मातृ भाषा का महत्त्व स्वयं ही सामने आ जाता है।

➢ चहुमुखी विकास में सहायक – शिक्षा का मुख्य उद्देश्य- व्यक्ति का चहुमुखी विकास करने से है। शिक्षा जीवन-पर्यन्त चलने वाली एक सामाजिक प्रक्रिया है। भाषा के द्वारा ही शिक्षा ग्रहण किया जाता है। शिक्षा पाकर ही व्यक्ति का विकास होता है इस विकास के अंतर्गत व्यक्ति का शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं भावात्मक विकास आता है। इस विकास का आरम्भ मातृ भाषा के साथ होता है जो बच्चे को माँ के दूध के साथ प्राप्त होती है। जैसे -जैसे बच्चा बड़ा होता है मातृ भाषा उसके विकास को सींचती है, और उसे बहुमुखी बनाती है। बच्चा मातृ भाषा से अवधारणाओं को समझता है जिससे फिर अन्य भाषा को समझने में सहायक मिलता है।

➢ विविधता में एकता की पहचान में सहायक – भारत को अदभुत भाषाई सांस्कृतिक विविधता का उपहार मिला है। प्रत्येक राज्य की अपनी राजकीय भाषा है और इन भाषाओँ की अपनी अपनी संस्कृति है। भाषा किसी व्यक्ति और समुदाय की पहचान निर्धारित करने वाले प्रमुख कारकों में से एक है। समाज और संस्कृति हमारे द्वारा बोले जाने वाले शब्दों को प्रभावित करते हैं और हम जो बोलते हैं,वे समाज को परिभाषित करते हैं। किसी भाषा के साथ जुड़े शब्द किसी किसी व्यक्ति की पहचान दर्शाते हैं भाषा के साथ जुडी संस्कृति, परम्पराएँ और रूढ़ियाँ , किसी समुदाय, समाज की पहचान को दर्शाता है। भारत की अपनी बहुसांस्कृतिक पहचान अपनी विविध भाषाओँ के कारण है। बोलियाँ और स्थानीय भाषाएँ भी भाषाई विविधताएँ हैं। जो विशिष्ट समुदायों, क्षेत्रों और संस्कृतियों को निर्धारित करती है। झारखण्ड राज्य को भी विभिन्न भाषाओँ, संस्कृतियों का संगम क्षेत्र कहा जा सकता है। द्रविड़,आर्य, एवं आस्ट्रो- एसियाटिक तत्वों के समिश्रण का इससे अच्छा कोई क्षत्रे भारत में शायद ही हो। इन विविधताओं में एकता भी इनकी अपनी पहचान है।

निष्कर्ष – इस प्रकार कहा जा सकता है कि मातृ भाषा का मनुष्य के विकास -प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका रहता है। मातृ भाषा कोई भी हो सकता है जैसे झारखण्ड में विभिन्न भाषाएँ बोली और समझी जाती है चूँकि झारखण्ड जंगलों पहाड़ों नदियों से घिरा हुआ है, साथ ही साथ विभिन्न प्रकार के जनजातीय समुह पाए जाते है, इन जनजातियों की अपनी-अपनी भाषा, संस्कृति और परम्पराएँ हैं। यहाँ 32 जनजातियाँ पाई जाती है। संथाल झारखण्ड की सबसे बड़ी जनजाति है, वे मुख्य रूप से संथाली भाषा बोलते हैं। उराँव दूसरी बड़ी जनजाति है, वे कुडुख बोलते हैं। मुण्डा झारखण्ड की तीसरी बड़ी जनजाति है वे मुंडारी बोलते हैं। हो चौथी बड़ी जनजाति है जिसकी अपनी जनजातीय भाषा हो है। खरवार, भूमिज,खड़िया, लोहरा, महली, इसके साथ ही साथ आदिम जनजाति भी पाए जाते हैं जो 8 हैं, इन जनजातियों की अपनी भाषा और संस्कृति है, इसके साथ ही साथ क्षेत्रीय भाषाएँ भी बोली जाती है, जिनमें मुख्यतः कुरमाली, नागपुरी, सादरी, खोरठा,पंचपरगानिया है। ये भाषाएँ बच्चों के रचनात्मक सर्वतोन्मुखी विकास में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करती है।

डब्लू .एम. रायबर्ण के मतानुसार , "मातृ भाषा एक उपकरण है- आनन्द, प्रसन्नता एवं ज्ञान का स्त्रोत है, रूचि तथा अनुभूति का निदेशक है। ईश्वर-प्रदत उन उच्चतम शक्तियों अथवा रचनात्मक शक्तियों का प्रयोग करने का साधन है, जिनके द्वारा हम अपने को उसके नजदीक पाते हैं।"

सन्दर्भ सूची –

- मिश्रा दिलीप कुमार & मिश्रा सचिन (2020), भाषा की समझ तथा आरम्भिक भाषा विकास, ठाकुर पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड पटना.
- जैन,पी.सी.(2002) हिंदी प्रयोग एक शैक्षिक व्याकरण, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली .
- तिवारी,डॉ. भोलानाथ संस्करण-2004 राज भाषा हिंदी, प्रभात प्रकाशन , दिल्ली .
- कपाड़ियाडॉ. स्वाति (2022), इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ क्रियटिव रिसर्च थोट, वॉलयूम- 10, इशु -02, आई एस एस एन-2320-2882.
- वेलडे हंस वनडे,क्रिचर रूठ & बायट जोहा(2022), लैंग्वजे प्लानिंग , वॉलयूम- 24, इशु -01,पेज 81-101.
- निशान्ति राजथूराई(2020), इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ रेंड इन साइंकटकफक ररसच भ एंड डेवलपमेंट,वॉलयूम-05,इ्रि 01.
- आशलशम फतई ओएकोला(2020),इंटरनि नल ऑनलाइन जनलभ ऑफ़ प्राइमरी एजकु ेिन वॉलयूम-09, इ्रि-02.
- उपाध्याय डॉ. अंिुल(2023), इन्टरनेट दलॉग,क्षेत्रीय ववकास में स्र्थानीय भाषाओंकी उपयोशगता https://www.yuvnews.com/hindi/40296/flashnews-40296
- शसंह कदलीप कुमार(2022,अप्रैल), इन्टरनटे दलॉग (https://kurukhtimes.com)नयी शिक्षा नीशत में भारतीय भाषाओ ं का स्र्थान (/sites/default/files/2022-04/nai-shiksha-neeti.jpg)
- इन्टरनेट डोकुमेन्ट्री झारखण्ड सरकार(2022), https://educationpointe.com/2022/01/13/nishtha-को स□-7-□ाा शर्थम क-क□ाा ओ/
- तिवारी डॉ. भोला नाथ (2019), भाषा विज्ञानं , किताब महल, २२-ए सरोजनी नायडू मार्ग ,ईलाहाबाद .
- अनुज डॉ. भुवनेश्वर (2019), क्षेत्रीय एवं जनजातीय भाषा साहित्य , पृथ्वी प्रकाशन रोहतक रोड नई दिल्ली .